Poetry and Fiction

Budhapa (Hindi)

Anil K. Tyagi, MD

Professor, Department of Forensic Medicine
University College of Medical Sciences, University of Delhi

Corresponding Author:
Dr Anil Tyagi
Department of Forensic Medicine
University College of Medical Sciences, Delhi-95
Email: dr_tyagianil at yahoo dot co dot in

Received: 24-AUG-2014 Accepted: 02-OCT-2014 Published Online: 02-OCT-2014

चाहतें बाकी रही नहीं वो अब, जो मुद्दतों से थी कभी,
जगा दे बुदबुदा के कानों में, वक़्त-ए-सहर मुझे कोई |१|

क्या करोगी अब खन-खना के घुंगरुओं को पाजेब के अपनी,
सुनने की रुन-झुन घुंगरुओं की, कुव्वत कानों में अब नहीं |२|

बेमानी है अब उठाना रुख से चांदी-से गेसुओं की चिलमन,
हैसियत देखने की रौनकें भी, इन आँखों में अब नहीं |३|

क्या होगा अब गुनगुना के, नगमा-ए-मोहब्बत इस उम्र में,
आशनाई दिल की मेरे जिगर से अपने ही, अब कोई नहीं |४|

अटक-अटक के चलने की, दिल को भी अब आदत है पड़ गई,
धड़कनों में इसकी अब, वो पहले सी रफ्तारी भी बची नहीं |५|

बुढ़ापा नाम है इस सूरत-ए-हाल का शायद, ऐ मेरे यारों,
जोश-ओ-रवानी किसी जोड़ में जिस्म के अब बाकी नहीं |६|

बहुत इश्क है फिर भी अपने बुढ़ापे से मुझे, ऐ मेरे दोस्तों,
गुज़ारी है उम्र सारी पाने के लिए इसे मैंने, पर गंवाई नहीं कभी |७|

Cite this article as: Tyagi AK. Budhapa (Hindi). RHiME [Internet]. 2014;1:26.